RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

कुरुक्षेत्र जिले के पेहवा नगरपालिका के सन्दर्भ में महिलाओं के मतदान व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन

अनुकृति
एम.ए.,यूजीसी-नेट(राजनीतिशास्त्र), म.न. 136 सैक्टर 5 कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

भूमिका

मतदान करने का अधिकार का आधिपत्य आधुनिक उदारवादी लोकतंत्रों में एक ऐसे व्यक्ति को परिभाषित करने की विशेषता है , जो राजनीति में भाग लेता है। मतदान की व्यवस्था के द्वारा किसी समाज या वर्ग का सदस्य राज्य की संसद या विधानसभा में अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए अपना मत करते हैं। भारतीय सविधान निर्माताओं ने भी सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार में विश्वास किया। भारत जैसे एक लोकतंत्रीय देश में सब वयस्कों को मतदान करने का अधिकार है, चाहे उनका धर्म कोई भी हो , शिक्षा का स्तर या जाति कुछ भी हो , वे गरीब हों या अमीर प्रत्येक 21 वर्ष के व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के मताधिकार प्रदान किया(एनसीईआरटी2014)। इसके बाद में 1989 में 61वें सविधान संशोधन द्वारा 21 वर्ष से आयु-सीमा कम करके 18 वर्ष कर दी गई। भारत में प्रत्येक व्यक्ति को मतदान करने का अधिकार मिल गया (कुमार 2014)।

स्टोक्स के अनुसार : मतदान व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का सामूहिक निर्णयों में समाहार करने का एक साधन है।

लिपसेट ने पॉलिटिकल मैन (1960) : मतदान भी प्रजातांत्रिक समाज में सर्वसम्मति निर्माण की एक कुंजी है।

मतदान व्यवहार:

मतदान व्यवहार का सबसे पहले अध्ययन मेरियम और हैरोल्ड गोसनेल ने अपनी पुस्तक नॉन वोटिंग मे किया था। मतदान व्यवहार का अध्ययन 20वीं की राजनीतिक प्रकिया है। सबसे पहले फ्रांस में 1913 में मतदान व्यवहार का अध्ययन किया गया। इसके बाद अमेरिका में दो विश्वयुद्धों के बीच के काल में और ब्रिटेन में महायुद्ध के बाद मतदान व्यवहार का आकलन किया गया। भारत में दिवतीय आम चुनाव के बाद इस प्रकार के अध्ययन को अपनाया गया। मतदान व्यवहार का तात्पर्य यह है कि मतदाता अपने मताधिकार के प्रयोग में किन तत्वों से प्रभावित होता है। मतदान व्यवहार में प्रथम यह अध्ययन किया जाता है कि कौन से तत्व व्यक्ति मताधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित और कौन से तत्व हतोत्साहित करते हैं। दूसरे स्तर पर इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किन तत्वो से प्रभावित होकर व्यक्ति एक विशेष उम्मीदवार और एक विशेष राजनीतिक दल के पक्ष में अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से मतदान व्यवहार का अध्ययन चुनाव से पहले या चुनाव के बाद भी किया जा सकता है।

भारत में मतदान व्यवहार:

माइनर वीनर एवं रजनी कोठारी-(इंडियन वोटिंग बिहैवियर,1965) में बताया है कि जाति , धर्म , नातेदारी महत्वपूर्ण कारक है। उनके अनुसार जाति को सबसे महत्वपूर्ण कारक है। भारत में स्वैच्छिक संगठनो के कम विकास एवं राजनीतिक दलों के सीमित प्रभाव के कारण धर्म,जाति,भाषा एवं क्षेत्र की भूमिका मतदान में बढ़ जाती है। परंतु जैसा कि घनश्याम शाह ने कहा कि राजनीतिक आन्दोलनों के फलस्वरूप राजनीतिक चेतना में वृद्धि होती है एवं तव जन्म पर आधारित प्राथमिक संगठनों का महत्व मतदान घट जाता है। मुख्य रूप से इन कारको के अतिरिक्त पार्टी संगठन और प्रचार नेता , विचारधारा और स्थानीय मुद्दे जैसे कारक भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

भारत की राजनीतिक प्रकियाएँ काफी हद तक सामाजिक परिस्थितियों होती हैं । मतदान व्यवहार में जाति का योगदान जैसे- क्षेत्रीयता , सामाजिक पिछड़ापन आदि इस बात को सिद्ध करते है कि राजनीतिक प्रकियाएँ सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं (सिंह2017)।

भारत जैसे विकासशील देश में मतदान व्यवहार का अध्ययन एक मुश्किल कार्य है, क्योंकि यहाँ मतदान व्यवहार विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार का होता है। विभिन्न क्षेत्र के मतदाताओं के उत्तर भी अनेक कारणों से

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनुकूल तथा प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं। हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे मतदाताओं की संख्या अधिक है जो साक्षात्कार को सरकारी प्रतिनिधि मानकर सही उत्तर देने से हिचकिचाते है। यही कारण है कि भारत के मतदाताओं के व्यवहारों का अध्ययन देश के चुनाव संबंधी कमियों को सुधारने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार भारत में मतदान व्यवहार का अध्ययन बहुत आवश्यक है। भारत में दूसरे आम चुनाव के बाद इस प्रकार के अध्ययन शूरु हुए(आसमुड़ एंड वीनर) रजनी कोठारी ने अपनी पुस्तक कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स(1973) इन इंडिया में जाति तथा राजनीति के बीच संबंध को स्पष्ट किया तथा इनके अनुसार जाति के तीन पक्ष हैं-1. धर्म-निरपेक्ष 2.एकीकृत 3. विचारधारत्मक। लोकतन्त्र के कार्य चलन के लिए स्वैच्छिक संगठनो की आवश्यकता पड़ती है , जिसकी भूमिका भारत प्रथा ने पूरी की । जाति के नाम पर राजनीतिक ध्रुवीकरण स्वभाविक था , क्योकि यह भारतीय जन-मानस के मन मस्तिष्क में सदियो से रची - बसी थी। जाति को राजनीतिक में लाने का श्रेय उच्च जातियों तथा स्वार्थी राजनीतिज्ञों को जाता है। इन्होने लोकतान्त्रिक प्रतिस्पर्धा को , परंपरागत रास्ते पर ही लड़ना अधिक आसान समझा (कुमार2012)।

मतदान व्यवहार एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक:

मतदान व्यवहार एवं उसे प्रभावित करने वाले कारकनिम्न हैं :

1. **परिवार एवं नातेदारी:** परिवार एवं नातेदारी मतदान व्यवहार को प्रभावित करने मेंमहत्वपूर्ण स्थान है। भारत में परिवार एवं नातेदारी मतदान आचरण को बहुत प्रभावित करते है। पारिवारिक आधार पर मतदाताओं के मतदान व्यवहार का विश्लेषण आवश्यक है क्योंकि परिवार के स्वरूप और आकार का व्यक्ति के विचारों पर प्रभाव पड़ता है। परिवार की स्थिति , माता-पिता व अन्य सदस्यों के राजनीतिक दृष्टिकोण का व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। कुछ विद्वान इसे रूढ़िवादिता कहते है, क्योंकि राजनीतिक विचारों और किसी विशेष दल के प्रति निष्ठाभाव का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण करने में परिवार ओर नातेदारी की भूमिका महत्वपूर्ण है। व्यक्ति को सत्ता-सम्बन्धों तथा मतदान का पहला अनुभव परिवार में होता है। इसकी पुष्टि अमेरिका में हुए अध्ययनों से होती की ¾ व्यक्तियों की राजनीतिक प्राथमिकताएँ एवं मतदान व्यवहार परिवार से प्रभावित होता है(shodhganga.inflibnet.ac.in)
2. **नेतृत्व:** मतदान को प्रभावित करने वाला कारक नेतृत्व भी है, भारत में तो इस आधार पर देश के अब तक के चुनावों की व्याख्या की जा सकती है। प्रथम तीन आम चुनावों में (1952 ,1957, व 1962) मुख्यत: पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व के कारण कॉग्रेस पार्टी को मत मिले , चौथे आम चुनावों में काँग्रेस की आंशिक पराजय इसलिए हुई कि काँग्रेस के पास पंडित नेहरू जैसा कोई चमत्कारिक नेता नहीं था , 1971-72 के चुनावों में श्रीमती इन्दिरा गाँधी के आकर्षक एवं विलक्षण नेतृत्व ने मतदान व्यवहार को काँग्रेस के पक्ष में किया तो 1977 में काँग्रेस इसलिए हारी क्योंकि कुछ अरुचिकर कार्यों के कारण श्रीमती इन्दिरा गाँधी के व्यक्तित्व कि छवि धूमिल हो चुकी थी बाद के समय सत्तारूढ़ दल का नेतृत्व आपसी लड़ाई का शिकार रहा और जनता में अपनापन खो बैठा इसी बीच राजनीतिक कौशल , साहस और अपनी विलक्षण राजनीति के बल पर श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपनी खोई छवि को पुन: सुधार लिया और जनवरी 1980 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी के कारण काँग्रेस के पक्ष में भारी मतदान हुआ। दिसंबर 1984 के चुनाव में राजीव गाँधी के व्यक्तित्व से मतदाता प्रभावित रहे परंतु 1989 में बफ़ोर्स दलाली के मामले में राजीव गाँधी का व्यक्तित्व धूमिल हो गया तो काँग्रेस पराजित हो गई और वी. पी. के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनी, मई 1991 के लोकसभा चुनाव में या व्यक्तित्व का कहीं देशव्यापी प्रभाव दिखाई नहीं दिया हाँ भारतीय जनता पार्टी कुछ संभलती हुई स्थिति में अटल बिहारी वाजपेयी व लाल कृष्ण आडवाणी कि भूमिका महत्वपूर्ण रही फिर भी 1991 में काँग्रेस की विजय में राजीव गाँधी की मौत के बाद उत्पन्न हुई, सहानुभूति लहर का महत्वपूर्ण हाथ रहा। वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व क्षमता का 2014 के चुनाव में भाजपा को जीत दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है(खान 2018)।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

3. **शिक्षा :** शिक्षा और मतदान का गहरा संबंध है। शिक्षा सदैव सामाजिक राजनीति जागरूकता को प्रोत्साहित करती हैं। यहाँ ऐसे प्रमाण भी मिले हैं जो यह प्रकट करता है कि अधिकतर शिक्षित महिलाए मतदान के लिए उदासीन होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में अशिक्षित महिलाए मतदान के लिए असाधारण उत्साह दिखाती हैं(विप्लव2012)।
4. **धर्म :**भारत में धर्मनिरपेक्षता से अभिप्राय है कि राज्य किसी एक धर्म विशेष से अपना संबंध नहीं रखेगा वरन सभी धर्मों के व्यवहार को समान रूप से मानेगा। जवाहर लाल नेहरू ने 1950 में घोषणा की थी कि भारत जैसे देश की सरकार , जहाँ अनेक धर्म तथा उनके प्रति समर्पित कई पीढ़ियों से चले आ रहे उनके मानने वाले बसते हैं(सिंह2017)। समाज , जो परंपराओ और धर्म द्वारा शासित होता हैं , में इसकी ज्यादा संभावना होती हैं कि मतदान धर्म या धार्मिक गुरुओं से प्रभावित होता हैं। राजनीतिक दल अधिकतर महिला मतदाताओं की धार्मिक भावनाओं के अनुसार समर्थन मांगते हैं और महिला मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए धार्मिक उत्सवों का चालाकी से प्रयोग करते हैं (विप्लव2012)। । भारत में आजादी के बाद धार्मिक आधार भी राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है- जेसे मुस्लिम लीग, शिरोमणि अकाली दल तथा शिवसेना कुछ इस तरह के दल है। जिनका एक मात्र उद्देश्य धर्म के नाम पर मतदाताओं को आकर्षित करके अपने पक्ष में मतदान करवाना है (सिकारी2000)।

   व्यवितत्व : नेता का व्यवितत्व भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है। उम्मीदवार का ईमानदार, सदचरित , लोकहितकारी और अच्छा व्यवितत्व मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करने वाला कारक हैं। भारतीय जनता एक राजनेता के रूप में एक ऐसी इमेज बना लेती है जिसके कारण व्यक्ति उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मतदान करते न कि किसी राजनीतिक पार्टी से । इनमे प्रमुख रूप से जवाहर लाल नहेरु , इन्दिरा गांधी , राजीव गाँधी एवं अटल बिहारी वाजपेयी, नरेंद्र मोदी का नाम लिया जा सकता है। प्रथम तीन लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की जीत का कारण जवाहर लाल नहेरु का व्यक्तित्व था।
5. **क्षेत्रीयवाद :**क्षेत्रवाद का अर्थ होता है कि सम्पूर्ण देश कि अपेक्षा किसी क्षेत्र अथवा राज्य के प्रति ज्यादा लगाव होना। क्षेत्रवाद के दो प्रमुख कारण होते हैं। एक तो यह कि सरकार द्वारा निरंतर उस क्षेत्र कि उपेक्षा कि गई हो अथवा उस क्षेत्र में तेजी से आई जागरूकता , जो पहले बहुत पिछड़ा रहा हो। क्षेत्रवाद के उदय से स्वायत्तता की मांग उठ सकती है , जिससे सम्पूर्ण देश की एकता प्रबवित हो सकती है। क्षेत्रवाद का उदय स्वतन्त्रता से पूर्व ही हो चुका था , जब अंग्रेजों ने लोगों को सिर्फ अपने ही क्षेत्र के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया था (मिश्रा2008)। क्षेत्रीयता की भावना भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोकसभा चुनावों और विधानसभा में भी मतदाता ऐसे उम्मीदवारों का समर्थन करते है , जिन्हे वे अपने हितों या अपने क्षेत्र की हितों की रक्षा करने के योग्य समझते हैं। सदियों से भारत विभिन्न संस्कृतियों एवं विभिन्न भाषाओं वाला रहा हैं। भारत में संस्कृति का विकास हुआ जिसमें अनेकता में एकता का स्वरूप विद्यमान है। राज्यों में बढ़ रही क्षेत्रीयवाद की प्रकर्ति के कारण मतदाता क्षेत्रवाद के नाम पर ही वोट डालता है। भारत में क्षेत्रीयता भावनाओं के कारण विभिन्न राज्य-स्तरीय एवं क्षेत्रीय दलों का विकास इसी परिणाम कहा जा सकता है। सदियों से भारत बहुसांस्कृतिक एवं बहुभाषीय देश रहा है। यहाँ एक ऐसी गंगा-जमुना संस्कृति का विकास हुआ जिसमे अनेकता में एकता के अदभूत स्वरूप का विकास हुआ है। यहाँ कि विभिन्न संस्कृतियां और विभिन्न भाषाएँ विभिन्न क्षेत्रों कि उपज हैं। राज्यों में बढ़ रही क्षेत्रवाद कि प्रवृति के कारण संबन्धित मतदाता के क्षेत्र के नाम पर वोट डालता है। पश्चिम बंगाल, आंध्र-प्रदेश, केरल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर-प्रदेश, बिहार तथा पूर्वोतर राज्य आदि में कुछ क्षेत्रीय दलों कि सफलता का कारण क्षेत्रवाद है(त्रिपाठी 2009)।
6. **भाषा :** विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति की सफलता के लिए भाषा बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

माध्यम से नेता मतदाताओं के व्यवहार अच्छा प्रभाव डालता हैं। हर क्षेत्र में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है, चाहे नौकरी की बात , सम्मानजनक जीवन स्तर प्राप्त करना हो या राजनीतिक जीवन हो, में योगदान है। भाषा के आधार 1956 में राज्यों का दोबारा से गठन किया। हिन्दी , अँग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं पर विवाद आरम्भ हो गया। 1966 में भी पंजाब को विभाजित करके पंजाब एवं हरियाणा दो राज्यों का गठन किया गया। भाषा को लेकर जैसे 1967 व 1981 के चुनावों मे डी एम के को जो भारी समर्थन मिला उसके मूल हिन्दी विरोध का बड़ा हांथ था(शर्मा2013)।

7. **मीडिया :** मीडिया एक ऐसा साधन है , जिसके माध्यम से सूचना, ज्ञान, मूल्य तथा अभिवृति एक से दूसरे तक पहूँचते है , अत: यह एक समाज में व्यक्तियों के मतदान को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोकमत के बनने और बदलने से संबन्धित तथ्यों के लिए हर व्यक्ति अखबार और इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर निर्भर रहता है(मिश्रा2008) मीडिया , राजनीतिक अभियान में इसका उपयोग भी मतदाता के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। मीडिया को लोकसभा चुनाव में अपने सर्वश्रेष्ठ स्तर पर प्रयोग किया गया। सोशल मीडिया के दुवारा भारत के युवाओं को आकर्षित किया।
8. **निर्णय :** सरकार के दवारा लिए गए निर्णय भी मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। जैसे - आज के समय सरकार के दुवारा नोटबंदी व जी एस टी के निर्णय ने प्रभावित किया हैं।राजनीतिक क्षेत्रों में यह भ्रामक धारणा भी रही है कि भारत कि जनता अशिक्षा अधिक गरीबी जातिगत द्वेष धर्मांधता आदि की शिकार है। इसलिए मताधिकार का प्रयोग विवेक के साथ नहीं कर पाई है। परंतु इस धारणा की विभिन्न चुनावों में मतदान से पुष्टि नहीं होती है क्योंकि कुछ अपवादों को छोड़कर जनता ने अनुशासनप्रियता प्रदर्शित की है और अपने मताधिकार की कीमत भी समझी है(खान2018)।
9. **जातिवाद :** जातिवाद मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला कारक रहा है। भारत के निर्वाचन प्रक्रिया को जातिवाद ने पिछले अनेक वर्षों से निश्चित रूप से प्रभावित किया है। स्वतन्त्रता पूर्व चुनाव क्षेत्र समाप्त कर दिये गए। परंतु इन सारे प्रबंधों के होते हुए भी जातिवाद एक अन्य रूप में प्रबल हो गया। पिछड़ी जातियों के लिए एक विशेष आरक्षण या दलित जाति के लोगों के लिए विशेष सुविधाओं ने जातिवाद को पनपने का नया अवसर प्रदान किया। जिन जातियों के हाथ में वोट बैंक है उनका महत्व अधिक है चाहे उनकी शिक्षा, सभ्यता या कार्यकुशलता का स्तर कितना ही कम हो। ऐसी स्थिति में भारत की पिछड़ी जातियो का महत्व अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत बढ़ गया(पन्निकर1955)विभिन्न जातियों संघों ने सामाजिक पद सोपान में अपनी जाति के लिए शिक्षा, नौकरी तथा अन्य सुविधाओं के क्षेत्र में अपनी ही जाति के लिए कार्य किए, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे सविंधान ने जातिवाद प्रगति को समाप्त करने का निश्चय किया। सर्ववयस्क मताधिकार के आधार पर एक व्यक्ति, एक वोट का नियम लागू किया तथा मिश्रित या साम्प्रदायिक बिहार, उत्तर- प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में इस तत्व का प्रभाव अधिक है। स्वतन्त्रता के बाद जातिवाद की भूमिका ओर व्यापक हो गई और वे आर्थिक , राजनीतिक क्षेत्रों में दवाब समूह की भूमिका का भी निर्वहन करते हुए , साथ ही साथ , अपनी से संबन्धित जातियों को राजनैतिक दृष्टिकोण से गतिमान करने की दिशा में अभिकर्ता के रूप में प्रयत्नशील हो गये। ज़्यादातर मतदाता उस राजनीतिक पार्टी को अपना मत देते हैं जिनका समीकरण उनकी जातियों अथवा उप-जातियों से स्थापित हो गया(ब्रास1965)।
10. **गुटबंदी:** गुटबंदी भारतीय राजनीति में मतदाताओं को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। कई बार इसका प्रभाव जाति से भी अधिक हो जाता है। माइनर वीनर जाति को मतदाता के मत निर्णय का निर्धारक कारक मानते है। गुटबंदी भी भारतीय मतदाता को ग्रामीण स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तक प्रभावित करती है। गुटबंदी मतदान व्यवहार निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुटबंदी मतदान व्यवहार को केवल प्रभावित ही नहीं करती बल्कि कुछ राज्यों में इसका प्रभाव अधिक मात्रा में बढ़ता जा रहा है तथा विशेष गुटों के नेता लंबे समय से चुनाव जीतते आ रहे हैं। गुटबंदी मतदान व्यवहार को दो तरह से प्रभावित करती है , प्रथम मतदाता जहां मतदाता अपने ही घटक को मत देते हैं उसे सकारात्मक गुट कहते हैं। दूसरा जब मतदाता घटकीय पार्टी से प्रभावित होकर मत देते हैं तो उसे नकारात्मक गुट कहते हैं(अनीता1998)।

11. **आर्थिक स्थिति:** व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है। समान्यतया यदि व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी हो तो मतदाता शासक दल के पक्ष मे मतदान करते है , अन्यथा शासक दल के विरुद्ध (शर्माऔरगुप्ता2013)। भारत में अभी भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों की पर्याप्त संख्या है जिनके पास सुविधाएं नहीं के बराबर है , और विकास के अवसर न्यूनतम है। यहाँ के व्यक्तियों में एक सामान्य प्रवृति , धन के प्रति तीव्र आकर्षण की है। यही कारण है कि चुनाव में उम्मीदवारों और राजनीतिक दलों द्वारा धन के बल पर मतदाताओं को आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। यदपि चुनाव आयोग द्वारा इस पर प्रतिबंध लगाने के प्रयास किये गए हैं, किन्तु फिर भी कानून से बचकर यह कार्य आज भी धड़ल्ले से किया जा रहा है। कोई भी चुनाव उनके लिए ज्यादा लाभप्रद होता है, जिनके पास चुनावों में खर्च करने का सामर्थ्य अधिक होता है। सामान्य परिस्थितियों में मतदाताओं को प्रभावित करने में ज्यादा सफल होते हैं(आडवाणी1984)।
12. **आधुनिकता का प्रभाव:** भारतीय समाज पर आधुनिकता का प्रभाव धीरे-धीरे पड़ा। नई शिक्षा , सरकारी नौकरियाँ , वयस्क मताधिकार और व्यवसाय के विस्तार का प्रभाव पुरानी जात-पात वाली समाज व्यवस्था पर भी पड़ा। नई शासन व्यवस्था के अंतर्गत सरकारी नौकरी , व्यापार , डॉक्टरी, वकालत आदि व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा व अधिकार के जो अवसर प्रस्तुत हुए , उसका लाभ समाज के शिक्षित और प्रमुख वर्गों ने उठाया और उनमें आधुनिकता का प्रसार हुआ। नए शासक वर्ग ने भी स्थानीय भावनाओं का आदर किया और ऊंची जातियों के प्रभाव को स्वीकार किया और उनको राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था में भाग दिया। इस प्रकार समाज नई राजनैतिक व्यवस्था के करीब आया(कोठारी2013)।
13. **सत्ता-विरोधीलहर**: जनसंप्रुभता को लोकतन्त्र का मुख्य आधार माना जाता है क्योंकि इस सिध्दांत के अनुसार अंतिम सत्ता जनता के हाथों में रहती है और जनता की इच्छा पर लोकतन्त्र का अस्तित्व विघमान है , जनता की इच्छा को ठुकराकर कोई भी सरकार लंबे समय तक नहीं चल सकती और अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति चुनावों के द्वारा ही संभव हो पति है। इसके अंतर्गत यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि जनता चाहे तो शासन को बदलकर दूसरे को सत्ता सौंप सकती है, क्योंकि सत्ता का अंतिम स्रोत जनता ही है।

शोध के उद्देश्य:

- उत्तरदाताओं के सामाजिक, आर्थिक स्तर को ज्ञात करना ।
- उत्तरदाताओं के मतदान व्यवहार की प्रकृति को समझना ।
- मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषणकरना ।

शोध क्षेत्र:

वर्तमान शोध कुरुक्षेत्र के पेहवा नगर में किया गया, इसमे में विवरणात्मक और अन्वेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गयाव 212 ऊततारदाताओं का दैव निदर्शन के माध्यम से चयन किया गया। प्राथमिक और दिवतीयक दोनों तरह के स्त्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त की गई। प्राथमिक जानकारी साक्षात्कार अनुसूची से जुटाई गयी व शोध में वस्तुनिष्ठता हेतु अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया गया। आंकड़ों को SPSS नामक प्रोग्राम में अंकित किया गया ताकि सही प्रकार के सारणीकरण व विश्लेषण किया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए जोकि इस प्रकार है;

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आयु वर्ग के आधार पर प्राप्त परिणामों में से कुल उत्तरदाताओं में से 18-38 आयु वर्ग में 50% के लगभग शामिल हैं, सामान्य जाति के 50.0% है, पिछड़ी जाति के 25.5%हैं, और अनुसूचित जाति 24.5% हैं। कुल उत्तरदाताओं में सेज्यादा हिन्दू धर्म के 82.4% के हैं । उत्तरदाताओं में 82.1% मुखियापुरुष पाये गए , आधे से ज्यादा (58.5%) दसवीं तक शिक्षित हैं, 12 तक शिक्षित 21.7% हैं , आधे से भी अधिक संख्या में विवाहित (78.8%) और एकाँकी परिवार के उत्तरदाता (65.8%) पाये गए,आय के स्रोत के आधार पर प्राप्त परिणामों में से कुल उत्तरदाताओं में से कृषि कार्यों में 13.2% हैं, सरकारी नौकरी में 14.2% हैं , प्राइवेट नौकरी में 26.4% हैं , व्यवसाय में 17.9% हैं, और मजदूरी में 28.3% लगे हुये हैं ।अधिकतम (98.1%)ने मतदाता पहचान पत्र व मतदान की आयु 18 वर्ष को उचित बताया व यह भी बताया कि वे अपनी इच्छा से अपने मत का प्रयोग करती हैं। परंतु अधिकतर (91.5%) ने माना कि चुनाव के समय उम्मीदवार द्वारा की गई घोषणाएँ मतदाता पर प्रभाव डालती हैं और चुनाव के समय जाति, धर्म, योग्यता, भाषा एवं अन्य कारकों का मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। 92.5% उत्तरदाताओंको नोटा के बारे में जानकारी नहीं थी। चुनाव के समय महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कम मतदान करती हैं व चुनाव के समय पूर्व काल में किए गए सामाजिक कार्यों व प्रलोभनों का भी मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। चुनाव के समय मीडिया के प्रचार-प्रसार का,राजनेता के प्रभावशाली व्यक्तित्व का प्रभाव भी पाया गया। उत्तरदाताओं को चुनाव के समय राजनेता द्वारा महिलाओं के लिए विशेषीकृत किए गए कार्य भी महिलाओं की मानसिकता को प्रभावित करते हैं व महिलाओं को मतदान के प्रति रुचि उत्पन्न करते हैं। उत्तरदाताओं को चुनाव के समय अनुभवी नेता का होना भी महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है।

सुझाव: महिलाओं के मतदान व्यवहार से संबन्धित सुझाव दिये गए जो कि इस प्रकार हैं:-

1. मतदान व्यवहार में महिलाओं को नोटा के बारे में जागरूक करना,
2. उम्मीदवार की शैक्षिक योग्यता को बढ़ाना ताकि समाज की जरूरतों को समझ सके और उन्हे दूर कर सके।
3. मतदान व्यवहार में महिलाओं को मतदान करते समय बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए, वो भी देश की आधी जनसंख्या है।
4. चुनाव के समय दिये जाने वाले प्रलोभन से ऊपर उठकर राष्ट्र के बारे में सोच समझकर वोट करना चाहिए।
5. मतदान व्यवहार में मीडिया का उचित प्रकार से प्रचार-प्रसार करना जिससे मतदाता प्रभावित होकर वोट करते है।
6. प्रत्येक चुनाव में महिलाओं को वोट करना चाहिए।
7. मतदान व्यवहार में लंबे समय से एक ही नेता से ऊबकर जनता परिवर्तन चाहती है।

संदर्भ सूची

1. रीड हुगो(1843), ए प्लेय फॉर वुमेन, लंदन, किटेड इन होललिस, प.293
2. पन्निकर के.एम.(1955),हिन्दू सोसाइटी एण्ड क्रान्स रोड्स, एशिया पब्लिकेशन,मुंबई,प.64
3. Eulau Heinz, Eldersveld and Janovitz Morris (ed.) 1956, Political behaviour amerind publishing Company private limited, New Delhi
4. लिपसेट एस.एम.(1960) , पॉलिटिकल मैन , न्यू दिल्ली, अर्नोल्ड हैनेमान्न इंडिया।
5. ब्रास आर पाल(1965) ,फ्रैकशन पॉलिटिक्स इन एन इंडियन स्टेट दी काँग्रेस पार्टी, इन यू.पी. यूनिवरसिटि ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस
6. मजूमदार डी. एन. एंड मदन टी. एन.(1970),एन इंटरोडक्शन टू सोशल एन्थ्रोलोजी,एशिया
7. आडवाणी एल.के.(1984) , इलेक्टोरल रिफामरस : इमपरेटिव एंड आरजेंट , जनरल कॉन्स्टीयूशनल एंड पारलियामेंटरि स्टीड्ज़.
8. कोठारी,रजनी (1973), कास्ट इन पॉलिटिक्स , ओरिएंट लॉंगमेन लिमिटेड़, न्यू दिल्ली, प. 4
9. वर्मा एस. पी. एंड नारायण इकबाल(1973) , वोटिंग विहैवियर एन ए चैंजिंग सोसाइटी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

10. मुरराव गूट एंड एलीज़ाबेथ रेड(1975) ,वुमन एंड वोटिंग स्टडीस मिण्ड्लेर्स ,मेट्रोन्स ऑर सेक्सीस्ट स्किएंटीस्म (लंदन).
11. सचदेवा (1983), इंटरोड़कसन टू पॉलिटिकल सोशियोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, न्यू दिल्ली.
12. त्रिपाठी श्रीप्रकाश मणि (2003) , राजनीतिक अवधारणाएँ एवं प्रवृतियां , शारदा प्रकाशन , नई दिल्ली.
13. मिश्रा महेंद्र कुमार(2008) , भारतीय राजनीति: समस्याएँ और समाधान , आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स,जयपुर.
14. त्रिपाठी श्रीप्रकाशमणि(2009) भारत में जनसहभागिता एवं मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक ,भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका से उद्द्रत.
15. कुमार अरुण (2009) पॉलिटिकल मार्केटिंग इन इंडिया, रीगल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली.
16. गुप्ता एम.एल. , शर्मा डी.डी. (2013) समाजशास्त्र साहित्य भवन, आगरा , उत्तर- प्रदेश.
17. आर्य साधना,मेनन निवेदिता,लोकनीता जिनी(2013), नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशलय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
18. कोठारी रजनी (2013), भारत में राजनीति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड.
19. अख्तर जाहिदा और शेख़ यौनीस (2014) Determinants of voting behaviour in India: Theoretical perspectives, public policy and administration research www.research.gate.net/publication/329415435-determinants-0f-voting-behavior-in-India-theoretical-perspectives
20. Biswas Aindrila,IngleNikhil, Roy Mousumi (2014) influence of social media on voting behaviour, Jppgnet.com/journals/jpg/vol-2-no-2june-2014/7.pdf
21. हजारिकाबिराज (2015) भारतमेंमतदानव्यवहारऔरउसकेनिर्धारककारक, Journal of humanities and social research, October ,www.iorsjournals.org/iors-jhss/papers/vol20-isssue/version-4/E0201042225.pdf
22. विप्लव (2012) भारत में महिला मानवाधिकार प्रकाशक , राहुल पब्लिकेशन हाउस मेरठ (इंडिया).
23. कुमार, धर्मेन्दर (2012) समाजशास्त्र , टाटा मैकग्रा हिल एडुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, न्यू दिल्ली.
24. स्टीवन्स एनने (2115), वुमेन पावर एंड पॉलिटिक्स पलग्रावे मैकमिलन हौन्घ्रिल्ल्स, न्यूयॉर्क.
25. काजी हुसैन (2017) people's voting behaviour in local election: A study on Annadanagar Union Parisad, Pirgachha, Rangpur. Journal of humanities social science, March, www.iorsjournals.org
26. Singh Divya (2017), safer election and women turnout: evidence from India, www.isid.ac.in/~epu/acegd2017/papers/Divyasingh.pdf
27. सिंह,जे. पी. (2017) समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त,तृतीय संस्करण , पीएचआइ लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली.
28. कुमार,अशोक (2017), भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले निर्धारित तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, राजनीतिक विज्ञान विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय , रोहतक इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्चhttp://pen2print.org/index.php/ijr/artiticle/view/12233
29. खान गुलाम रसूल (2018) , भारतीय लोकतन्त्र में चुनाव एवं मतदान को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक- एक समसामयिक अवलोकन,डबल्यूडबल्यूडबल्यू.सोश्ल रिसर्च फ़ाउंडेशन.कॉम
30. www.census2011.co.in
31. www.bhaskar.com12may2018
32. Shodhganga.inflibnet.ac.in//bitstream/10603/70468/6/06-chapter%202.pdf
33. Shodhganga.inflibnet.ac.in//bitstream/10603/70468/8/08-chapter%204.pdf
34. Https://hi.m.wikipedia.org

RRIJM 2015, All Rights Reserved